स्व. श्री आदित्य विक्रम बिड़ला

जन्म : १४ नवम्बर १९४३ मृत्यु : १ अक्टूबर १९९५

श्री धनश्यामदासली बिड़ला ने अपने पोते आदित्य को निम्न सलाह दी थी–

''धीर बनों गंभीर बनो, आदित्य बनो विक्रमशाली।
भगवन्त करें मंगल तेरा पथ दर्शक हो वह वनमाली।।''

प्रख्यात उद्योगपति श्री बंसत कुमार जी एवं श्रीमती सरला देवी के पुत्र श्री आदित्य विक्रम बिड़ला ने अपने दादाजी की उपरोक्त सलाह को अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया।

अपने औद्योगिक जीवन का प्रारंभ उन्होंने केवल २२ वर्ष की आयु में १९६५ में कलकत्ता में ईस्टर्न स्पिनिंग मिल्स लिमिटेड की स्थापना से किया। आपकी कार्य कुशलता से प्रभावित होकर श्री धनश्याम दासजी बिड़ला ने ग्रासिम एवं हिन्डालको जैसी विशाल कम्पनियों की बागडोर भी आपको सौंप दी। आपके मार्गदर्शन में इण्डियन रेयॉन, इन्डो–गल्फ फर्टिलाइजर्स आदि कम्पनियों ने सफलता के नये आयाम स्थापित किये।

इतना ही नही स्व. आदित्य बिड़ला निःसंदेह ही भारत के सर्वप्रथम विश्वव्यापी व्यवसायी और उद्योगपति थे जिन्होनें दूरदृष्टि एवं अनुभव से देश की १९९१ में अपनाई उदारीकरण की नीति के परिणामों को समझकर अपने औद्योगिक समूह का विस्तार प्रसार विदेशों में किया। आपके उद्योग समूह के मलेशिया स्थित पॅन सेन्चुरी एडिबल ऑयल की विश्व की सबसे बड़ी पाम आयल रिफायनरी तथा थाईलैण्ड स्थित इन्डो–थाई सिन्थेटिक कंपनी लिमिटेड को थाईलैण्ड की सिंथेटिक यार्न की सबसे बड़ी निर्यातक कंपनी होने का गौरव प्राप्त हुआ।

अपने औद्योगिक विश्व के सफलतम प्रतिष्ठानों के साथ–साथ वे भारतीय रिजर्व बैंक के सेंट्रल बोर्ड के डायरेक्टर और एयर इंडिया, आई. सी. आई. सी. आई तथा आय. एल. एफ. एस. के डायरेक्टर रहे। वे एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, मनीला के बोर्ड ऑफ गर्वनर्स सदस्य तथा फिलिपींस के मानद् कौंसल जनरल पदों से सम्मानित थे।

आप एक सुंस्कृत कला प्रेमी थे। सन् १९९० में सितम्बर माह में उनकी पेन्टिग की एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी जिसे कला प्रमियों ने बहुत सराहा था। आपको प्रकृति ने मधुर गले से नवाजा था। कलकत्ता में एक बार विशाल जनसमुदाय के समक्ष एक गीत गाकर आपने सबको आश्चर्य चकित कर दिया था। वे संगीत कला केन्द्र के संस्थापक अध्यक्ष थे तथा इसके अतिरिक्त अनेकानेक धार्मिक, समाजसेवी संस्थाओं एवं ट्रस्ट से अभिन्न रूप से जुड़े हुए थे।

भारतीय सरकार ने आपकी अप्रतिम योग्यताओं को मद्दे नजर रखकर आपको अनेक सरकारी मंडलों में सम्मिलित किया था। १९९२ में तत्कालीन वित्त मंत्री डॉ० मनमोहन सिंह के नेतृत्व में आप जापान गये थे। आर्थिक एवं व्यवसाय मिशन के वे एक प्रमुख सदस्य थे। आपको अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था। जिनमें प्रतिष्ठित 'बिजनेसमैन ऑफ ईयर' तथा प्रथम 'जे. आर. डी. टाटा अवार्ड फॅार कार्पोरेट लीडरशीप' प्रमुख हैं जो मृत्योपरान्त सितम्बर १९९६ में प्रदान किया गया था। १ अक्टूबर १९९४ को अमेरिका में उनकी मृत्यु हुई। वह अपने पीछे पुत्र कुमार मंगलम, पुत्री वासवदत्ता, पत्नी श्रीमती राजश्री बिड़ला एवं शोकाकुल दादा–दादी श्री बसंत कुमारजी बिड़ला एवं श्रीमती सरलाजी बिड़ला को दुःखी छोड़ गये हैं। उनकी मृत्यु में समाज ने गौरवशाली व्यक्तित्व को खो दिया है। उन्होंने अपनी औद्योगिक प्रतिभा से समाज का नाम गौरवान्वित किया।

निः संदेह श्री आदित्य विक्रम बिड़ला इस सदी के महानतम उद्योगपतियों में थे। वे कम उम्र में बहुत कुछ कर गये जिससे युवा पीढ़ी सदियों तक प्रेरणा लेती रहेगी।